सनबर्ड की चिपचिपी परेशानी

चित्र करंट साइंस से साभार

छोटी सनबर्ड (*नेक्टारिनिया ज़ाएलोनिका लिन*) के सिर पर चिपचिपा मकरंद और पराग कणों का मिश्रण चिपका हो, तो कई बार लगता है कि यह उनके लिए परेशानी का सबब है और वे त्रस्त हो जाती होंगी। शायद होती भी हैं जैसा कि हाल में प्रकाशित अवलोकनों से पता चलता है। ये सनबर्ड भारतीय मैन्ग्रोव वृक्ष ब्रुगिएरा जिम्नोराइज़ा और बी. सेक्सेन्गूला की एकमात्र परागणकर्ता हैं।

करंट साइन्स के एक ताज़ा अंक में बी. नागराजन, एम. कृष्णनमूर्ति, सी. पान्डियाराजन और ए.मणिमेकलन ने सनबर्ड और इन वृक्षों के परागण के विस्तृत अवलोकनों का ब्यौरा दिया है।

ब्रुगिएरा के फूल बड़े-बड़े होते हैं और काफी समय तक खिले रहते हैं। हर फूल 40-60 माइक्रो लीटर मकरंद प्रतिदिन बनाता है। इसका मतलब है कि हर फूल अपनी पूरी ज़िन्दगी (15-20 दिन) में 16-20 लाख पराग कण बनाता है। जैसे ही सनबर्ड की चोंच इस फूल के पराग कोश के संपर्क में आती है, वैसे ही इस फूल से पराग कणों का सैलाब फूट पड़ता है। बार-बार फूलों के इस तरह से सम्पर्क में आने से सनबर्ड की चोंच में बहुत अधिक मात्रा में मकरंद का जमाव हो जाता है और इसमें ढेरों पराग कण फंस जाते हैं। पौधे का काम - यानी परागण - तो हो गया मगर इसके चलते शायद पक्षी की चोंच चिपचिपी हो जाती है। तभी हर यात्रा के बाद सनबर्ड इसी चिपचिपे पराग कण युक्त मकरंद को निकालने और अपनी चोंच को साफ करने में काफी वक्त - 30 सेकण्ड से एक मिनिट तक - लगाती है।

सनबर्ड अपनी छाती पर चिपके मकरंद और पराग कणों को निकालने के लिए चोंच का इस्तेमाल करती है और फिर चोंच को साफ करने के लिए पैरों की उंगलियों का। सिर को साफ करने के लिए वह उसे पेड़ की टहनी से जमकर रगड़ती है। नागराजन व साथियों ने पाया कि सनबर्ड सिर को रगड़ने के लिए पेड़ की टहनी का एक निश्चित हिस्सा चुन लेती है, जिसका इस्तेमाल वह रोज़ दो-तीन बार परागण-यात्रा के बाद करती है। इससे ऐसा लगता है कि सनबर्ड के पास स्थानों को पहचानने की क्षमता है। यदि वह इस चिन्हित सफाई स्थल पर न जाए, तो मकरंद और पराग उसकी चोंच में फंसकर जीभ को बाधित कर देते हैं। सनबर्ड इससे परेशान रहती है, इसलिए अपनी जीभ भी बार-बार साफ करती नज़र आती है। *(स्रोत फीचर्स)*